ताकि कल्पना को पंख मिलें...

– मीनाक्षी चौहान

किसी भी भाषा को सुंदर, सरल, सुघड़ बनाने में साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है। कहानी, कविता, गीत आदि के बिना किसी भी भाषा की कल्पना करना बेईमानी ही होगा। बाल साहित्य में रोचक शिक्षाप्रद बाल कहानियां, बालगीत, बाल कविताएं प्रमुख हैं। बाल साहित्य के अंतर्गत वह शिक्षाप्रद साहित्य आता है जिसका लेखन बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया गया हो।

पढ़ने का कौशल बच्चे में ऐसे गुण विकसित करता है जो कोई और कौशल नहीं कर सकता। दरअसल, पढ़ने का कौशल सभी आधारभूत कौशलों की जननी है जो मनुष्य के विकास के लिए जरूरी है। बच्चे ने पढ़ने के कौशल को सीख लिया तो उसमें आत्मविश्वास बढ़ेगा। यही बढ़ता आत्मविश्वास बच्चे के व्यक्तित्व में निखार आएगा। बच्चे की पढ़ने की दक्षता उसे स्कूल में अपने घर समाज या किसी और जगह मदद पहुंचाती है। स्कूल में पढ़ने की दक्षता का होना एक बुनियादी जरूरत है इसी के माध्यम से कोई बच्चा विभिन्न विषयों को पढ़ने समझ सकता है जिसमें बाल साहित्य हैं। काफी हद तक मदद करता है।

कहानी, कविता, गीत आदि प्राचीन समय से एक परंपरा के रूप में चली आ रही है जो अपने अंदर बहुत कुछ समाए हुए हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी यह हमारे मूल्यों, परंपराओं, संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने में सुंदरता के साथ सहायता प्रदान करती है। इसलिए बच्चों की किताबों में कुछ ऐसे मूल्यों को स्थान दिया जाए जो हमारे संवैधानिक मूल्य जैसे समता, न्याय, आदर्श समाज की संरचना आदि से मेल खाते हैं। साथ ही इन मूल्यों को सीधे–सीधे शिक्षा के रूप में न देकर बहुत ही सरल तरीके से किसी घटना या पात्र के जरिए रखा जाए और उस घटना में वे मूल्य सहज ढंग से उभर कर आए। साहित्य से हमेशा भाषा समृद्ध बनती है और भाषा में शुद्धता आती है। वैसे ही बाल साहित्य बच्चों के सर्वांगीण विकास में बहुत सहयोगी है, यह बच्चों की कल्पना को पंख देता है।

बच्चों में सृजनात्मकता, रचनात्मकता और उनमे नैतिक मूल्यों को विकसित करता है। यह बाल साहित्य ही है जो बच्चों में सकारात्मक ऊर्जा पैदा करता है। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में मदद करती है। बाल साहित्य हमारी साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत को बच्चों तक पहुंचाने का कार्य करता है। आज के समय में बच्चों को बाल साहित्य की आवश्यकता बहुत अधिक है क्योंकि परिवार संयुक्त से एकाकी हो गए हैं। बच्चे नाना–नानी दादा–दादी से दूर होते जा रहे है जिस कारण वे बच्चे दादा दादी नाना नानी से कहानी नहीं सुन पाते हैं। बाल साहित्य केवल बच्चों का मनोरंजन ही नहीं करता वरन भाषा विकास में सहायता करता है। विद्यार्थी नए–नए शब्द व वाक्य सीखते हैं। उच्चारण बेहतर होता है व्याकरण अच्छा होता है। शब्द संचय, शब्द भंडार बढ़ता है। बच्चों में अभिव्यक्ति क्षमता, सजगता, आत्मविश्वास, गतिशीलता, सर्जनशीलता, कल्पनाशीलता बढ़ाता है। साथ ही मानवीय गुणों को कहानी के सशक्त पात्रों के माध्यम से आत्मसात करता है।

वास्तव में बच्चे जानकारी से नहीं ,सर्जन से नई कल्पना से आनंदित होते हैं। बाल साहित्य बच्चों को अंधविश्वास से दूर करते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने में योगदान देता है। बाल साहित्य अप्रत्यक्ष रूप से उसे सामाजिक प्राणी के रूप में संस्कारित करने वाला होता है। यह बच्चों को उसके परिवेश से जोड़ता है उसे उसके परिवेश से जुड़ी जैसे घर, गांव, पड़ोस, दोस्त, मस्ती, खेल, रहस्य, रोमांच आदि से जोड़ता है। साहित्य द्वारा बच्चे जिज्ञासु पाठक बनते हैं। बाल साहित्य की प्रत्येक विधा का अपना रस और आनंद है। बच्चों के मन में नई

ऊर्जा और प्रेरणा भरकर उसमें कुछ कर गुजरने का भाव पैदा करना ही बाल साहित्य का उद्देश्य है। प्रारंभिक कक्षाओं में विज्ञान या सामाजिक विज्ञान विषय नहीं पढ़ाया जाता है लेकिन कई कहानियां, कविताएं इत्यादि के माध्यम से बच्चे इन विषयों में पढ़ाई जाने वाली सामग्रियों से कुछ हद तक अवगत हो जाते हैं।

इनको पढ़ते समय बच्चे बहुत तरह की घटनाओं से गुजरते हुए परिस्थितियों के अनुसार उन्हें कुछ सवालों के जवाब मिलते हैं तो कभी–कभी उलझे हुए सवालों के जवाब स्वयं तलाशते हैं। बच्चे सारे घटनाक्रमों से गुजरकर विवेक का प्रयोग करना सीख सकते हैं। जिस कारण बच्चों के अंदर तार्किक शक्ति का विकास होता है। अवलोकन करने की क्षमता विकसित होती है। बाल साहित्य बच्चों और शिक्षकों के मध्य संबंधों को मधुर बनाता है। कक्षा–कक्ष में बाल साहित्य पर कार्य करते समय बच्चों व शिक्षकों को कई मुद्दों पर समृद्ध और सार्थक चर्चा करने का अवसर मिलता है जिस कारण बच्चे सहज हो जाते हैं और ज्यादातर बच्चे इसमें रुचि लेते हैं और शिक्षकों को पढ़ाने वाले पाठ्यक्रम में इससे मदद मिलती है। इस प्रकार की स्वस्थ बातचीत कक्षा में लोकतांत्रिक वातावरण का निर्माण करती है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर एनसीईआरटी ने बाल साहित्य की अहमियत समझते हुए बाल साहित्य को विद्यालय में धरातल पर उतारने की पहल करते हुए बरखा श्रृंखला की शुरुआत की। बरखा श्रृंखला में 40 कहानियां है जो चार स्तर–स्तर 1, स्तर 2, स्तर 3, स्तर 4 और पांच मूल विषयो पर आधारित है। विषय जिसके अंतर्गत–संबंधों, पशु पक्षियों, संगीतमय यंत्रों, खेल और खिलौने, हमारा परिवेश और खानपान में व्याप्त हैं।

यह कहानियां भी बच्चों के संदर्भ और उनके दैनिक अनुभवों को लेकर बुनी गई हैं। रीडिंग कॉर्नर विद्यालय का वह कोना है जिसमें अध्यापक और बच्चे मिलकर बाल साहित्य संबंधित पुस्तक इस तरह रखते हैं कि वह पुस्तके बच्चों की पहुंच में रहे बच्चे अपनी पसंद से पुस्तक चुन सके और पढ़ सके। यह कोना आकर्षक तरह से सजाया गया हो। रीडिग कॉर्नर की देखभाल, स्वच्छता का दायित्व भी बच्चों को ही सौंपना चाहिए जिससे वह रीडिंग कॉर्नर की अहमियत को समझें।

बाल साहित्य से जुड़ा अनुभव–

सर्वप्रथम जब मैं विद्यालय में गई मैंने अपने विद्यालय में कुछ पुस्तकें बाल साहित्य से संबंधित देखीं। चूंकि कहानियां पढ़ने का मुझे बहुत शौक तो था ही मैं कुछ कहानियां भी पढ़ने लगती थी। परंतु मैं उनका प्रयोग सही से नहीं जानती थी मुझे यह नहीं मालूम था कि यह पाठ्यचर्या का ही बहुत बड़ा हिस्सा है जिस कारण में बच्चों के साथ इन पुस्तकों पर कार्य नहीं कर पा रही थी। स्वयं कहानियां पढ़कर बच्चों को मैं सुनाती रहती थी। कुछ समय बाद में भाषा शिक्षण की कार्यशाला से जुड़ी तथा मैंने बाल साहित्य का उपयोग, प्रयोग समझा और आज के समय में हम विद्यालय में बाल साहित्य पर बच्चों के साथ कार्य कर रहे हैं। बच्चे भी इस सब मे रुचि दिखा रहे हैं। यह बहुत ही सराहनीय है कि बाल साहित्य हमारे विद्यालयों की पाठ्यचर्या का अहम हिस्सा बन चुका है तथा आज विद्यालय के समय में इन पुस्तकों के लिए समय (कालांश) निश्चित कर दिया गया है।

आज के परिप्रेक्ष्य में कहा जाए तो यह पाठ्यक्रम को पूर्ण करने में सहायक साधन के तौर पर देखा जा रहा है। जब हम छोटे थे हम भी कहानी, कविता पढ़ने का बहुत शौक रखते थे परंतु तब यह बाल साहित्य सब बच्चों की पहुंच में नहीं था विद्यालय में ऐसी पुस्तकें नहीं मिलती थीं। हमें जहां भी ऐसी पुस्तकें मिलती थी तो उसको पढ़कर ही हम पुस्तक का पीछा छोड़ते थे। परंतु आज के समय में बहुत परिवर्तन आ चुका है। अधिकांशतःसभी विद्यालयों में प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य (कहानी कविता बाल गीत) आदि की पुस्तकें पहुंच चुकी हैं।

किताब को कक्षा में बरतना–

मैंने अपने विद्यालय के बच्चों के साथ बरखा श्रृंखला की फूली रोटी पर कार्य किया। जो जमाल और उसकी मम्मी की कहानी है। इसमें चित्रों का भरपूर प्रयोग किया गया है और रसोईघर का चित्रण किया गया है। बच्चों ने कहानी सुनते व पढ़ते समय कहानी की किताब में बहुत रुचि दिखाई। बच्चों ने रसोईघर में रखी वस्तुओं के बारे में जानकारी दी और अपने अनुभव भी बताए। कुछ बच्चों ने कहा कि हमारी रसोई चित्र से अलग तरह की है मगर सामान लगभग ऐसा ही है। किसी बच्चे ने कहा मैंने भी रोटी बनाने की कोशिश की मगर आड़ी–टेढ़ी रोटी बनी परंतु अब मैं भी जमाल की तरह ही कटोरी से रोटी काट कर गोल बना दूंगी । कुछ ने कहा लड़के रोटी नहीं बनाते हैं और भी बहुत से प्रश्न बच्चों ने कहानी से निकाले।

जैसे– खाना घर के किस हिस्से में बनता है? उत्तर– रसोईघर में। रोटी किस से बनती है? रोटी कैसे बनती है? पहले आटा लेते हैं फिर उसमें पानी डालकर गूंथते हैं

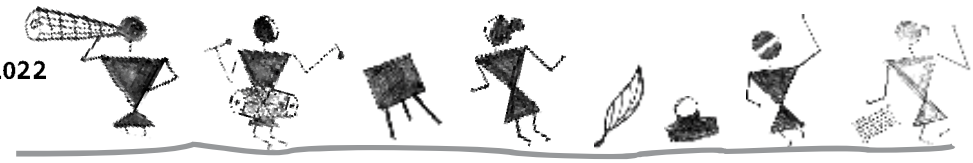

फिर लोई गोल–गोल बनाते हैं और बाद में चकला–बेलन से बेलकर तवे पर सेंकते हैं।

तुम्हारे घर पर रोटी किस पर बनती है? चूल्हे पर, गैस चूल्हे पर। रोटी किस आकृति की होती है? गोल। रसोई घर में रखी हुई और कौन कौन सी वस्तु है जो गोल आकार की होती है? आकृतियों के बारे में भी आपसी चर्चा के बाद प्रश्नों का निदान भी किया गया। छोटा सा मोटा सा लोटा पर भी बच्चों के साथ कार्य किया गया। यह पुस्तक भी बच्चों को बहुत पसंद आई। इसमें बच्चों ने बहुत अधिक रुचि ली। इस किताब में तुक वाले शब्दों का प्रयोग कर रचना को सुंदर रूप दिया गया है जिसमें बच्चों ने बहुत अधिक रुचि दिखाई जैसे छोटा–मोटा लोटा, लंबे खंबे,चंदर बंदर अंदर 'मोर चोर डोर, लटका मटका झटका अटका आव ताव' आदि शब्द। इसमें भी रंग–बिरंगे चित्रों का बाहुल्य है जो बहुत ही आकर्षक प्रतीत होता है। इन चित्रों को देखकर बच्चे आसानी से कहानी समझ लेते हैं।

बड़े बच्चों ने इस कहानी पर आधारित चित्रों का चार्ट बनाया। छोटे–छोटे बच्चों ने भी कोशिश की चित्र बनाने की। हम जानते हैं कि बच्चे कल की दुनिया की नींव हैं, हमारा भविष्य हैं। अतः बाल साहित्य द्वारा बच्चे के मन को सुशोभित करते हुए भाषा से उसके सर्वांगीण विकास की एक आधारभूमि तैयार कर सकता है। बाल साहित्य ही है जो खेल–खेल में उसे आसपास की दुनिया से उसे जोड़ सकता है। उसका परिचय आसपास की दुनिया से करा सकता है और उसकी जो जिज्ञासायें हैं उनको शांत कर सकता है। बाल साहित्य ही है जो पाठ्य पुस्तकों से इतर बच्चों को खेल–खेल में बहुत सारी अवधारणाओं के प्रति समझ बढ़ाने में सहायता प्रदान कर सकता है। कहानियां, कविताएं विभिन्न भाषाई कौशलों को विकसित करते हुए उनमें तात्कालिक अनुभव से परे बच्चों की दुनिया को समृद्ध बनाने के लिए विशाल स्रोत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके द्वारा बच्चों की मौखिक भाषा शैली सबर सकती है और बच्चों में संवाद अदायगी का विस्तार हो सकता है।

सन्दर्भ –

1. पाठ्यपुस्तक रिमझिम
2. बरखा सीरिज तथा बाल साहित्य की किताबें
3. ELEM कार्यशाला में हुई चर्चा तथा इस दौरान पढ़े कई लेख
4. कक्षा शिक्षण अनुभव

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय महादेव नगर, काशीपुर, उत्तराखण्ड में अध्यापिका के पद पर हैं)

आया बंदर

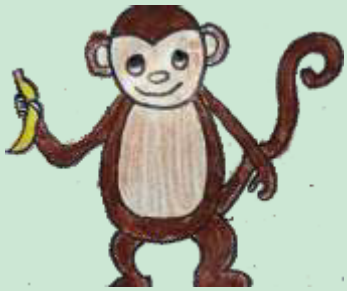

दबे पाँव से बंदर आया
दादी का खाना चटकाया।
नटखट पर फिर गुस्सा आया
दादी को बिल्कुल ना भाया।
दबे पाँव से बंदर भागा
दादी ने तब शोर मचाया।
दाँत दिखाकर लगा डराने
दादी ने पत्थर से भगाया।
बगीचे के फल चटकाने
दबे पांव बन्दर आया।
दादाजी तब ऊंघ रहे थे
उनको नहीं पता चल पाया।
जोर-जोर से भौंक-भौंक कर
झबरू कुत्ता दौड़ा आया।
नींद खुल गई दादाजी की
बंदर को तब मार भगाया।
दादी बोली इस बंदर ने
हाय! क्या उत्पात मचाया।
पेड़ के सारे पके फलों को
आधा तोड़ा आधा खाया।

– अनीता चौहान
राजकीय प्राथमिक विद्यालय कोटद्वारा, चम्बा, टिहरी गढ़वाल